B.A. I Subject - Psychology (Subsidiary)

Teacher - A.K. Sinha Date - 19.10.2020

Topic — Determinants of Personality
(Biological Determinants)

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का शील-गुण अलग-अलग होता है जिसका परिणाम व्यक्ति के व्यक्तित्व गठन पर भी पड़ता है, परिणामस्वरूप व्यक्तियों के व्यक्तित्व में व्यक्तिगत भिन्नताएँ पाई जाती हैं। व्यक्तित्व का निर्माण या गठन एक विकासात्मक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत चलती रहती है। जन्म काल में जननिक धरोहर के रूप में कुछ जैविक क्षमताएँ प्राप्त होती हैं और वे जीवन के अन्तिम पड़ाव तक सामाजिक प्रभावों के बीच रहती हैं। इसलिए व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास पर जैविक क्षमताओं और सामाजिक प्रभावों की अन्तःक्रियाओं के परिणाम स्वरूप व्यक्तित्व का विकास अपूर्व ढंग से होता है। कहने का तात्पर्य है कि सभी वातावरणीय घटनाओं की तरह ही व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया भी Cause Effect नियम द्वारा ~~[struck out]~~ संचालित होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यक्तित्व का निर्माण-क्रम में जैविक (Biological) तथा सामाजिक अथवा वातावरण (Environmental) तत्वों का प्रभाव पड़ता है जिन्हें व्यक्तित्व निर्धारक कहा जाता है। इस प्रकार व्यक्तित्व के निर्धारक तत्वों को निम्नांकित दो श्रेणियों में रखकर उनका उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है। :—

(1) Biological Determinants of Personality,
(2) Social or Environmental determinants of Personality

(1) यहाँ पर सबसे पहले Biological determinants का उल्लेख करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है। जैसा कि ऊपर में उल्लेख किया जा चुका है कि प्राणी जन्म काल में ही कुछ जननिक क्षमताओं से सम्पन्न होता है, वे इन्हीं गुणों या क्षमताओं के प्रभाव को Biological determinants की श्रेणी में रखा जाता है। यहाँ पर व्यक्तित्व को निर्धारित करने वाले निर्धारकों का उल्लेख किया जा रहा है। :—

शेष पेज-2 पर

(i) वंशानुक्रम (Heredity) :— व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्धारण में वंशानुक्रम (Heredity) बहुत बड़ा योगदान रहता है। वंशानुक्रम के आधार पर ही व्यक्ति को शारीरिक गठन, रंग, लम्बाई तथा विशेषताओं का निर्धारण देखा जाता है। इस सम्बन्ध में सबसे पहले Mendel ने उजले और काले चूहों तथा छोटे-बड़े मटर पर संकरण के प्रभाव का अध्ययन किया तथा उपर्युक्त तथ्यों की पुष्टि की। परन्तु ऐसी सुविधाएँ मानव-व्यक्तियों के अध्ययन में संभव नहीं हैं। मनुष्यों के व्यक्तित्व पर वंशानुक्रम के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए विद्वानों परिवार जीवनियों का सहारा लिया है क्योंकि उनका विश्वास था कि कोई लक्षण यदि परिवार के अनेक पीढ़ियों में व्याप्त हो तो उस लक्षण या व्यक्ति-गुणों को वंशानुक्रम से प्राप्त माना जाता है। इसकी पुष्टि के लिए अनेक अध्ययन किये गये। Galton ने 1869 में प्रकाशित अपनी पुस्तक Hereditary Genius एवं 1873 में प्रकाशित English men of science में अपने इस विश्वास पर जोर देते हुए बताया है कि प्रतिभा और प्रबलता कुछ ही परिवारों में सीमित रहती है। व्यक्तित्व निर्धारण के सम्बन्ध में इसी विचारधारा के अन्तर्गत Goddard ने Juke families का अध्ययन कई पीढ़ियों तक किया और पाया कि जिन परिवारों की माताएँ मन्द-बुद्धि की थी, उनके बच्चे भी मन्दबुद्धि या बुद्धिहीन थे।

वंशानुक्रम का प्रभाव व्यक्तित्व-निर्धारण में पड़ता है इसे जाँचने के लिए Gottesman ने Minnesota Multiphasic Personality Inventory - MMPI तथा Cattel के High school Personality Questionaire का निर्माण कर 34 जोड़े अभिन्न और भिन्न यमजों (Twin) बच्चों पर अध्ययन कर पाया कि अभिन्न युग्मों में भिन्न युग्मों की अपेक्षा अधिक समानता थी। व्यक्ति के व्यक्तित्व

शेष पृष्ठ – 3 पर

पर वंशानुक्रम के प्रभाव को देखने के लिए Kallmann, Shuffy, Malmo तथा Cattell ने भी अध्ययन किया। इनके अध्ययनों से भी व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम के महत्व की पुष्टि हुई है।

उपर्युक्त तथ्यों के बावजूद भी व्यक्तित्व के विकास में वंशानुक्रम का महत्व आंशिक है। हाँ यह सत्य है कि यह व्यक्तित्व निर्धारण का एक Predisposing factor मात्र हो सकता है। व्यक्तित्व निर्धारण के इसके अलावे भी जैविक कारक हैं।

(ii) शारीरिक बनावट (Physic) :- व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण में व्यक्ति का शारीरिक बनावट का महत्वपूर्ण योगदान देखा गया है। व्यक्ति के शारीरिक गठन के अनुरूप ही उसका धातु-स्वभाव भी अलग-अलग होता है। व्यक्ति के शारीरिक गठन के अनुसार उसका धातु-स्वभाव के बारे में क्रेश्मर तथा शेल्डन के व्यक्तित्व वर्गीकरण में विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है जो कि उदाहरणीय है। शारीरिक बनावट सम्बन्धि भिन्नता उसके प्रति लोगों द्वारा की जानेवाली प्रतिक्रियाओं में भी भिन्नता होती है। लोगों द्वारा किया जाने वाला प्रतिक्रिया ही व्यक्तित्व के निर्धारण में अहम स्थान रखता है न कि शारीरिक बनावट के स्वयं का स्थान होता है। त्रुटिपूर्ण शारीरिक गठन वाले व्यक्तियों को यदि लोग अपमान करते हो या चिढ़ाते हो उस व्यक्ति में, Adler के अनुसार, हीनता का भाव उत्पन्न होने लगता है और व्यक्ति क्षतिपूर्तिात्मक व्यवहार (Compensatory behaviour) करने लगता है जो अच्छा या बुरा दोनों हो सकता है। ऐसे व्यक्तित्व के लोग दार्शनिक, अच्छे संगीतज्ञ, कवि, कलाकार या श्रेष्ठ गायक भी बन जाते हैं अथवा समाजविरोधी (Anti-social) तथा मनोविकारी (Psychopathic) व्यक्तित्व के भी बन सकते हैं। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व निर्धारण में व्यक्ति का शारीरिक गठन एवं उसके धातु-स्वभाव का महत्वपूर्ण स्थान रहता है।

शेष - पृष्ठ 4 पर

(iii) (Blood Chemistry & Endocrine glands)

रक्त रसायन तथा अन्तःस्रावी ग्रंथियाँ :— धारणा है कि पुरानी विचारधारा के अनुसार मानव शरीर के निर्माण में चार प्रमुख द्रवों का महत्वपूर्ण योगदान होता है जिनके अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ साथ व्यक्ति का स्वभाव भी प्रभावित होता है। हालांकि यह विचारधारा पुरानी है फिर भी रसायनिक द्रव और व्यक्ति के व्यवहार के बीच सम्बन्ध होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। वैज्ञानिक खोजों के फलस्वरूप कुछ शरीर रसायन अथवा रक्त रसायन तत्वों का वर्णन निम्नांकित किया जा रहा है :—

(क) (Blood Circulation) रक्त संचार :— चूँकि व्यक्ति का रसायनिक तत्व रक्त में ही मिला होता है जो सम्पूर्ण शरीर द्वारा प्राप्त किया जाता है तथा उसे पुनः सम्पूर्ण शरीर में संचालित किया जाता है। इसी क्रिया को रक्तसंचार की क्रिया कहते हैं। व्यक्ति का शरीर जिन रसायनिक तत्वों को उत्पादित करता है वह रक्त में मिल जाता है जो सम्पूर्ण शरीर में प्रवाहित होता जिसके आधार पर व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यवहारों को प्रदर्शित करता है। परन्तु यदि शरीर के द्वारा किसी खास रसायनिक तत्वों की उत्पादकता में वृद्धि या कमी होती है तो उसका प्रभाव व्यक्ति के व्यवहार पर भी पड़ता है जो कि उसके व्यक्तित्व निर्धारण में अहम भूमिका निभाता है। इसके अलावे जब रक्तसंचालन क्रिया में तीव्रता या कमी होती है तब रक्तचाप में परिवर्तन हो जाता है, जिसका प्रभाव व्यक्ति के स्वभाव पर पड़ता है। जैसे उच्च रक्तचाप वाले व्यक्ति में घबड़ाहट, क्रोध तथा संवेगात्मक व्यवहार के लक्षण देखे जाते हैं।

शेष पृष्ठ - 5 पर

इसी प्रकार रक्तरसायन में यदि रक्त में शर्करा की मात्रा अधिक हो जाती है या कम होती है तो उसका प्रभाव न सिर्फ शरीर-संतुलन पर पड़ता है बल्कि व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। इसकी अधिकता या कमी से व्यक्तित्व में कुछ खास परिवर्तन होते हैं। जैसे- व्यक्ति की मनोदशा या चित्त में परिवर्तन, चिड़चिड़ाहट, भ्रम, चेतना की कमी, वाक् असंतुलन तथा संवेगात्मक अस्थिरता के लक्षण पाये जाते हैं जिसका प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से पड़ता है।

(ख) अंतःस्रावी ग्रन्थियाँ (Endocrine glands) :— मानव शरीर में अनेक प्रकार के नलिका विहीन ग्रंथियाँ पायी जाती हैं। इन ग्रन्थियों के सक्रियता से स्राव निकलते हैं और सीधे रक्त में मिल जाते हैं। ये स्राव शरीर के किसी अंग की क्रियाओं को घटाने या बढ़ाने की शक्ति रखते हैं जिसके प्रभाव के परिणाम स्वरूप व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। Louis Berman ने तो यह दावा किया कि मानसिक-रोगी, चोर, पागल, अपराधी इत्यादि सब के सब अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के दोष के कारण होते हैं तथा ग्रन्थियों का उपचार कर उन्हें ठीक किया जा सकता है। परन्तु Haskins का विचार ठीक इसके विपरीत है। इनके अनुसार व्यक्तित्व के विकास में अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का महत्व अब तक अच्छी तरह स्पष्ट नहीं हो सका है। इस सम्बन्ध में (Cleghorn) क्लेगहॉर्न का मत है कि शरीर के आन्तरिक रसायनिक वातावरण पर अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के प्रभाव को आनुवांशिक विशेषताओं से अलग नहीं किया जा सकता है, इसलिए व्यक्तित्व और अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के सम्बन्धों पर जो भी अध्ययन हुए हैं और केवल मार्ग मिलता है, मंजिल नहीं। अतः मानव-शरीर के अन्दर पाये जाने वाले कुछ प्रमुख अन्तःस्रावी ग्रन्थियों का उल्लेख करना यहाँ पर अपेक्षित हो जाता है।

शेष पृष्ठ - 6 पर →